Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **3**

A–319

B.A. (Part–III) Examination, 2022

RAJASTHANI

Paper - I

(प्राचीन राजस्थानी काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

(सवालां रा जवाब हिन्दी या राजस्थानी में दिया जाय सकै)

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. नीचे लिख्योड़ा सवालां रा पडूत्तर देवो। (सबद सीमा **50** सबद) :

   (i) ढोला रो पूरो नाम कांई हो, वो किण देस रो राजकुंवर हो ?

   (ii) ढोला री दोनूं राणियां रो नाम उणारै पीहर प्रदेस रै नाम साथै लिखो।

(iii) 'ढोला-मारू रा दूहा' किण भांत रो काव्य है ? इणरी दो विसेसतावां बतावो।

(iv) ''हंस चलण, कदळीह जंघ, कटि केहर जिम खीण'' इणरो अरथ बतावतां ओ'ई बतावो' के ओ किणरै विसय में कहीज्यो है ?

(v) 'गोरा-बादळ पद्मिनी चउपई' रा रचनाकार कुण है ?

(vi) अलाउद्दीन चित्तोड़ गढ़ माथै चढ़ाई क्यूं करै ?

(vii) रतनसेन री दो राणियां रा नाम लिखो।

(viii) रतनसेन सिंघल द्वीप री यात्रा वास्तै क्यूं जावै अर किणरै साथै जावै ?

(ix) रतनसेन ने धोखा सूं बंदी कुण बणावै ?

(x) गोरा-बादळ किण भांत सूं रतनसेन ने छुडावण जावै ?

खण्ड-ब

नोट :- नीचे लिख्योड़ा पद्यांसां री सप्रसंग व्याख्या करो। (सबद सीमा **200** सबद) :

2. जे जीवण तिन्हां-तणां तन ही मांहि बसंत।

धारइ दूध पयो हरे, बालक किम काढंत॥

ससनेही समदां परइ, बसत हिया मंझार।

कुसनेही घर आंगणई, जांण समंदा पार॥

3. हे सखिए, परदेस प्री, तनह न जावइ ताप।

बाबहियउ आसाढ जिम, विरहणि करइ विलाप॥

बाबहियउ न विरहणि, दुहुवा एक सहाव।

जब ही बरसइ घण-घणउ, तबही कहइ प्रि आव॥

4. कूंझां धउ नइ पंखड़ी-थांकउ विनउ विहेसि।

सायर लंघी प्री मिलंउ, प्री मिलि पाछी देसि॥

म्हें कुरझां सरवर तणी, पांखां किणहि न देसि।

भरिया सर देखां रहां, उड आधेरि वहेस॥

5. परणु कोई जई पदमणी, ते जिम भगति करइ तुम्ह तणी।

अम्हे (अम्हे) जिमाणी जाणां नहीं, कोप कीउ कामिणि इम कही॥

माणवती हुई महिला मूल, माण गमाडइ विनय समूल।

विनय गयइ न रहइ सोहाग, विण सोहाग न लाग न भाग॥

6. बादळ महि जिम बीजळी, चंचल अति चमकंति।

महिल माहि तिम ते तणु, झलहल तनु झलकंति॥

पान प्रहासइ पदमिणी, गलि तंबोल गिलंती।

निरमल तनि तंबोल ते, देह माझे दीसंति॥

7. प्रचीन काव्य परंपरा माथै सांतरो आलेख लिखो।

8. नीचै लिख्योड़ा बिंदुवां मे किणी अेक माथै टीप लिखौ :

(i) राजस्थानी छंद परंपरा में 'दूहा' छंद री परिभासा, भेद, महत्त्व।

(ii) रस री परिभासा अर भेदां रो वरणन।

(iii) काव्य दोस री परिभासा अर भेदां रो वरणन्।

खण्ड–स

नोट :– नीचे लिख्योड़ा सवालां में किणी **दो** रा पड़ूत्तर देवो। (सबद सीमा **500** सबद) :

9. ढोला मारू रा दूहा रो कथानक अर लोक काव्य री विसेसतावां बतावतां सिद्ध करो के ओ अेक लोक काव्य है।

10. ढोला मारू रा दूहा अेक प्रेमाख्यान है। इणरी विरोळ करो।

11. गोरा–बादळ पद्मिनी चउपई रै आधार माथै रतनसेन राजा रो चरित्र–चित्रण करो।

12. प्राचीन काव्य परंपरा री खास–खास प्रवृत्तियाँ रो वरणन करतां थकां उणमें गोरा–बादळ पद्मिनी चउपई री ठौड़ बतावो।